# मंगल जगे गृही जीवन में

आचार्य श्री सत्यनारायणजी गोयन्का

# मंगल जगे गृही जीवन में

आचार्य श्री सत्यनारायणजी गोयन्का

विपश्यना विशोधन विन्यास
धम्मगिरि, इगतपुरी

# मंगल जगे गृही जीवन में

## विषयानुक्रमणिका


**दो शब्द** ..... ५
**मंगल-धर्म** ..... ७
**श्रेष्ठ मंगल क्या है?** ..... ९
**मित्र के प्रति व्यवहार** ..... १२
**गृहस्थ धर्म** ..... १४
धम्मिक सुत्त ..... १४
**शील धर्म** ..... १७
**सुखी-गृहस्थ** ..... १९
इहलोकीय हित-सुख के साधन : चार सद्गुण ..... २०
पारलौकिक हित-सुख के साधन : चार धर्म-संपदा ..... २२
सद्गृहस्थ की चार लौकिक संपदाएं ..... २५
सद्गृहस्थ के चार लौकिक सुख ..... २६
सद्गृहस्थ की चार अभिलाषाएं ..... २९
सद्गृहस्थ की चार संपत्तियां ..... ३१
सद्गृहस्थ के चार कर्तव्य ..... ३४
**गृही आचार-संहिता** ..... ३६
नमस्कार किसको करें? ..... ३६
धन विनाश के छः कारण ..... ३८
सही मित्र की पहचान ..... ४०
वास्तविक छः दिशाएं ..... ४२
१. माता-पिता की सेवा ..... ४३
२. गुरुजनों की सेवा ..... ४४
३. पत्नी की सेवा ..... ४४
४. मित्र की सेवा ..... ४५
५. नौकर की सेवा ..... ४६
६. श्रमण-ब्राह्मण की सेवा ..... ४६

**आदर्श गृहस्थ** ..... ४८
हितकारी सत्पुरुष ..... ४८
हितसुखमय गृहस्थ ..... ४८
सुखी गृहपति ..... ५२
विवाह धर्म-विधि ..... ५४
चार प्रकार के सहवास ..... ५४
मंगल मुहूर्त ..... ५५
पांच वर्जित व्यापार ..... ५६
हितसुखकारी दुर्लभ पंचरत्न ..... ५६
धर्म रक्षा करता है ..... ५७
अपने कर्म से ही सुगति-दुर्गति, प्रार्थना से नहीं ..... ५७
अंधविश्वास का त्याग ..... ५८
गृहस्थ को निर्वाण की प्राप्ति ..... ५९
**शीलवती गृहिणी** ..... ६०
**कुल-वधू के लिए दस उपदेश** ..... ६३
उपदेशों का स्पष्टीकरण ..... ६३
**नवल वर-वधू के प्रति आशीर्वचन** ..... ६६
**करणीयमेत्त-सुत्त** ..... ७२
**परिशुद्ध दान** ..... ७५
**दान-कथा** ..... ७७
**दान-चेतना** ..... ८३
**पराभव सुत्त** ..... ९२
**मित्तानिसंस सुत्त** ..... ९५
**मंगल हो! कल्याण हो!** ..... ९८
विपश्यनाः संक्षिप्त परिचय ..... ९९

# दो शब्द

"राजकुमार सिद्धार्थ ने भरी युवावस्था में राजमहल का वैभव-विलास छोड़ा, सुंदरी सुशीला पत्नी तथा अपने बूढ़े मां-बाप को बिलखते छोड़ा और नवजात शिशु पुत्र राहुल को छोड़ा। दाढ़ी-मूंछ और सिर मुँड़ा कर, भगवा वस्त्र पहन कर भिक्षु बन गया। जब गौतम 'बुद्ध' बन गया, तब उसने ऐसी शिक्षा दी, जिससे हजारों लोगों ने उसका अनुकरण किया। रोते हुए मां-बाप, पुत्र-कलत्र को छोड़-छोड़ कर वे भी उसकी भांति भिक्षु बन गये। भिक्षुओं का संघ बढ़ता गया, घर परिवार उजड़ते गये। बुद्ध की शिक्षा का यही परिणाम हुआ। उसने स्वयं घर-बार छोड़ा, अतः गृहस्थ जीवन के प्रति घृणा फैलायी। शुद्धधर्म निवृत्ति का मार्ग है अतः प्रवृत्तिमार्गी गृहस्थ के लिए इस मार्ग पर न कोई आशा है न आश्वासन।"

ऐसी और इस जैसी अनेक मिथ्या बातें पिछले डेढ़ हजार वर्षों से अपने यहां निर्बाध रूप से प्रसारित होती रही हैं। इस मिथ्यात्व के उद्गम और प्रचार का मुख्य कारण यही था कि बुद्ध-वाणी के हजारों पृष्ठों का विपुल साहित्य देश से विलुप्त हो गया। उसका एक पृष्ठ भी नहीं बचा। जो सर्वजन हितकारिणी विपश्यना विद्या कभी घर-घर में प्रचलित थी, उसका प्रशिक्षण तो दूर, उसका नाम तक विस्मृत हो गया। शब्दकोष से यह शब्द ही निकल गया। ऐसा चाहे जिस कारण से हुआ हो, परंतु यह सत्य है कि इससे हम इस देश के एक विश्ववंद्य ऐतिहासिक महापुरुष और उनकी कल्याणी विद्या को गँवा बैठे। अब सौभाग्य से यह सारा साहित्य और उनकी सिखायी हुई विपश्यना विद्या पड़ोसी देश से भारत लौट कर आयी है और भारत के ही नहीं, पश्चिम के अनेक देशों के लोगों ने भी इसे बिना झिझक स्वीकार किया है और यह संख्या बढ़ती ही जा रही है।

अब यह सत्य स्पष्ट होता जा रहा है कि भगवान बुद्ध की शिक्षा सबके लिए थी – कोई भिक्षु हो या गृहस्थ। उनकी शिक्षा केवल गृहत्यागियों के लिए ही नहीं थी, बल्कि गृहस्थों के लिए भी उतनी ही महत्त्वपूर्ण और मंगल फलदायिनी थी। गृहस्थ अपना गृही जीवन कैसे सुख-शांति से बिता सकें, इसका व्यावहारिक निर्देश भगवान की शिक्षा में भरा पड़ा है। परंतु लोगों को इसकी पूरी जानकारी नहीं है। अब भी अनेक लोगों के मन में यह भ्रांति समायी हुई है कि बुद्ध की शिक्षा गृहत्यागियों के लिए है, गृहस्थों के लिए नहीं।

इस भ्रांति को दूर करने के लिए विपश्यना विशोधन विन्यास की 'विपश्यना' पत्रिका में समय-समय पर बुद्ध-वाणी के आधार पर जो लेख निकले हैं, उन्हें इस पुस्तिका में संकलित कर प्रकाशित किया गया है, ताकि लोगों के मानस से मिथ्या भ्रांति दूर हो। गृहस्थों के लिए जितने सदुपदेश इस पुस्तिका में संकलित किये गये हैं, वस्तुतः उससे कई गुना अधिक बुद्ध-वाणी में विद्यमान हैं। इनसे बुद्धानुयायी देशों के करोड़ों गृहस्थ लाभान्वित होते रहे हैं, आज भी हो रहे हैं।

हमारे देशवासी यह जान लें कि भगवान बुद्ध ने सद्गृहस्थों के लिए कितनी व्यावहारिक और कल्याणकारी शिक्षा दी। इससे प्रेरित होकर अधिक से अधिक गृहस्थ भगवान के बताये मार्ग पर चल कर अपना कल्याण साध लें! अपना मंगल साध लें! यह पुस्तिका उनके लिए प्रभूत प्रेरणा का कारण बने!!

**विपश्यना विशोधन विन्यास,**
धम्मगिरि, इगतपुरी